आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष- 10 • अंक-257 • उदयपुर, मंगलवार 11 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अबोहर (पंजाब) में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की शाखा अबोहर (पंजाब) के तत्वावधान में दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता श्री बालाजी समाज सेवा संघ रहा। शिविर में 210 दिव्यांगों की ओपीडी 39 का ऑपरेशन चयन, कैलिपर्स का माप एवम् कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री मान राजेन्द्रपाल जी (समाजसेवी), अध्यक्ष श्री गंगन जी मल्होत्रा, (चैयरमेन बालाजी समाज सेवा संघ), विशिष्ट अतिथि श्री अमित भाई पधारे।

शिविर में डॉ एस.एल गुप्ता जी ने सेवाएं दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से श्री मान् मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), उपस्थित रहे।

खुर्जा (उत्तरप्रदेश) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण, दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के खुर्जा, जिला– बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश आश्रम में संपन्न हुआ।

इस शिविर में 19 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 07 के लिये कैलिपर्स की सेवा सराहनीय हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री हरपाल सिंह जी (पूर्व विधायक खुर्जा), अध्यक्षता श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान महोदय, खुर्जा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान जयप्रकाश जी चौहान, श्रीमान राजप्रताप सिंह जी (समाज सेवी), श्रीमान योगेन्द्र प्रताप जी राघव (सेवा प्रेरक एवं संयोजक) कृपा करके पधारे और संस्थान की सेवा प्रकल्पों की सराहना की।

टेक्नीशियन टीम में श्री नाथूसिंह जी, शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट का पूर्ण योगदान रहा।

हमीरपुर में कृत्रिम अंग सेवा

नारायण सेवा संस्थान की देश–विदेश में स्थित शाखायें भी दिव्यांगजनों को राहत प्रदान करने व सेवा करने में तत्पर हैं। ज्वालाजी, जिला– कांगड़ा, (हि.प्र.) की हमीरपुर शाखा द्वारा मातृ सदन, सरस्वती विद्यालय के पास कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगाया गया।

इस शिविर में कुल 88 दिव्यांगजन आये। जिनमें से 28 को कृत्रिम अंग प्रदान किये। तथा 40 को केलिपर्स वितरित किये गये।

शिविर में गरिमामय उपस्थिति श्रीमान् प्रेमकुमार जी धूमल– पूर्व मुख्यमंत्री हि.प्र. (मुख्य अतिथि), श्रीमान् रमेश जी घवाला– पूर्व मंत्री वरमानीया विधायक (अध्यक्ष), श्रीमान् रविन्द्र रवि जी– पूर्व मंत्री महोदय (विशिष्ट अतिथि), श्रीमान् रसील सिंह जी मनकोटिया– शाखा संयोजक हमीरपुर, श्रीमान् संजय जी जोशी– पत्रकार, श्रीमान पंकज जी शर्मा एवं श्री रामस्वरूप जी शास्त्री– समाजसेवी पधारे।

टेक्निशियन टीम में श्री नरेश जी वैष्णव एवं श्री किशन जी लोहार ने सेवाएं दी। शिविर टीम श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री– प्रभारी, श्री रमेश जी मेनारिया, श्री मुन्ना सिंह जी आदि ने सहयोग किया।

भक्ति में भाव सर्वोपरि

भगवान हमेशा भाव को ग्रहण करते हैं, उन्हें पाने की इच्छा मात्र से ही विकार स्वतः मिट जाते हैं। यदि मनुष्य में उनके प्रति व्याकुलता नहीं है तो चाहे कितनी ही बार उनकी लीला–कथाएं सुने, लेकिन भगवान की कृपा से वह वंचित ही रहेगा।

पंडित जी किसी गांव में भगवान श्रीकृष्ण की कथा सुना रहे थे। प्रसंग था–गोपाल श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं और उनके जीवन आदर्श। इस प्रसंग में उन्होंने श्रीकृष्ण का बहुत सुन्दर भावचित्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने अनेक विलक्षण आभूषणों की भी चर्चा की। कथा सुन रहे असंख्य श्रोताओं में एक डाकू भी था। कथा समापन के बाद पंडित जी अपनी पोथी और भक्तों द्वारा आई भेंट को एक गठरी में बांधा और अपने गांव की ओर चल पड़े। डाकू भी उनके पीछे हो लिया। कुछ दूर जाने पर डाकू ने पंडित जी को रूकने के लिए कहा, वे रूक गए। उसने पंडित जी कहा, 'मैं चोर–डाकू हूं। आपने कथा में जिस गोपाल और उसके आभूषणों का वर्णन किया है, क्या आप उसे जानते हैं? 'यदि जानते है तो बताइए, अन्यथा मैं आपका सामान लूट लूंगा।' पंडित जी ने कहा, 'मैं उनका पता जरूर बताउंगा, लेकिन इससे पहले यह गठरी मेरे घर तक ले चलो।' पंडित जी ने कथा की पोथी और भेंट सामग्री की गठरी उसके सर पर दी।

पंडित जी ने घर पहुंचने के बाद उससे कहा कि गोपाल मथुरा और वृदावन में रहते है। वहीं जाकर तुम्हें उन्हें खोजना होगा। डाकू मथुरा–वृदावन के लिए रवाना हुआ। उसने वहां गोपाल को खोजा लेकिन वह नहीं मिला। भूखे–प्यासे रहकर भी उसने खोज जारी रखी।

एक दिन उसे एक सुंदर नन्हा सा बालक कुछ गायों को चराता हुआ दिखा। उसकी मनमोहक छवि पर डाकू इतना मोहित हो गया कि वह उसे एकटक उसे देखता रहा। यही बालक श्रीकृष्ण थे, जिन्होंने अपने प्रति डाकू के भाव देखकर उसे दर्शन दिए। वह उस बालक से बोला, 'मैं इस छवि को हमेशा देखना चाहता हूं। बालक ने कहा, 'जैसी तुम्हारी इच्छा।' उस दिन के बाद यकायक डाकू का हृदय परिवर्तन हो गया और वह कृष्णभक्त बन गया मृत्युपरांत परमधाम को प्राप्त हुआ।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बार–बार स्मरण करें क्यों भगवान ने नर देही देदी।

नर तन सम कवनेहु देहि।
जीव चराचर जाँचत तेही।।

कैकेयी को भी नर देही मिली थी, नारी देही मिली थी। लेकिन कैकेयी सद्पयोग नहीं कर पायी। ये मोर पंख आप देख रहे हैं, मोर तो एक पक्षी होता है। मोर केवल एक पक्षी होता है। मोर पंख भगवान, कृष्ण भगवान, गिरधर, मुरली अधरधर। ये मुरली भी आहा, मधुर धुन। रास की आवाज, ये महारास, ये मधुर रास, ये उत्सव। ये उमंग, ये उत्साह भरे। मोर पंख भी भगवान कृष्ण अपने मुकुट में धारण करते हैं। आइये, आप को पूर्णिमा की तरफ ले चलें। जगत जननी, सीतामाता और सासुमाता कौशल्या माता। मैथिलीशरण जी गुप्त ने लिखा साकेत में –

गोल गोल गोरी बाहें।
दो आँखों की दो राहें।
भाग सुहाग पक्ष में थे।
अंचल बंद कक्ष में थे।।

मैं तो यहाँ ठहर गया– महाराज। आज सुबह स्वाध्याय करते हुए ठहर गया। भाग सुहाग पक्ष में।

भाग, आपका भाग्य बहुत अच्छा है। कभी – कभी आप सुनते होंगे कोई महाराज कहते हैं कि– मिथुन राशि के लिये आज का दिन अच्छा नहीं है– भाई। रावण और राम दोनों एक ही राशि के थे। अच्छी बात है, ज्योतिष भी एक विद्या है। ज्योतिष भी विज्ञान है। उनको प्रणाम करें। लेकिन स्वभाव सुधारने की तरफ विशेष ध्यान देवें। अपणा स्वभाव अपण ही सुधार सकते हैं। भाग सुहाग पक्ष में थे। सीता जी के भाव अच्छे, कौशल्या जी के भाव अच्छे। और सुहाग, आप समझ गये होंगे रामचन्द्र जी भगवान। सीता का सुहाग तो रामचन्द्र जी भगवान। अरे, अपने सबके राम ये श्वास देने वाले।

सम्पादकीय

एक प्रकार की सामग्री आजकल बाजार में बहुतायत से उपलब्ध है –'यूज एण्ड थ्रो।' अर्थात् उपयोग में लो, उपयोग पूरा हो जाये और वह वस्तु अनुपयोगी हो जाये तो उसे फेंक दो।

किन्तु बड़ी व्यथा भरी बात है कि इस संस्कृति का विस्तार होकर मानवीय संबंधों में उतरती जा रही है। आज हमारे ज्यादातर संबंध भी 'यूज एण्ड थ्रो' की तर्ज पर होते जा रहे हैं। आज संबंधों की गहनता में भावात्मकता के बजाय उथलापन आता जा रहा है।

एक व्यक्ति को दूसरा तभी तक प्रिय है जब तक काम का है। अपना काम निकालने के लिये व्यक्ति कितने– कितने समझौते करता है, कितना गर्जीला होकर दूसरों का उपयोग करता है, यह यत्र–तत्र देखा जा सकता है। तन, मन या धन से व्यक्ति का उपयोग करना ही आज की उपभोग संस्कृति बनती जा रही है।

यह समाज का कुरूप चेहरा है। यह मानवीय गुणों का पतन है परन्तु इसका प्रभाव इतना फैल गया है कि 'यूज एण्ड थ्रो' की विष बेल पनपती ही जा रही है। हमें इस बारे में सोचना चाहिये। कि क्या यही इंसानियत है?

कुछ काव्यमय

मैं अपना भला सोचूं,
यहाँ तक तो ठीक है,
पर मैं दूसरों का बुरा सोचूं,
यह कैसी मानवता है।
मैं किसी केवल
उपभोग या उपयोग
के भाव से संबंध रखूं
यह तो दानवता है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मन को पालतू बनायें

सुमित्राजी ने कहा– पिताश्री बहुत व्याकुल है– प्रभु। पिताश्री बार–बार कहते हैं– राम को बुला दो, मेरे लक्ष्मण को बुला दो, मेरी सीता को बुला दो, मेरी कौशल्या को बुला दो। राम भगवान ने पिताजी को जाकर प्रणाम किया। ऐसे राजा जो चक्रवर्ती सम्राट थे। ऐसे राजा जो विदेहराज, राजा जनकजी जिनके चरणों में बार–बार नमन् करते थे।

ऐसे चक्रवर्ती सम्राट, अग्नि देवता स्वयं प्रकट होकर के, अग्नि देवता ने कहा– राजन् तुम धन्य हो। खीर का दान दिया था, ऐसे दशरथजी व्याकुल हो रहे है। कभी–कभी मन में आता है, हम भी कई बार व्याकुल हो जाते हैं। बेचैनी बढ़ जाती है। कहते हैं– आज तो मेरा मूड ठीक नहीं है।

आज मेरे से बात मत करो। बात–बात पर मेरे को चिड़चिड़ाहट हो रही है, ये मन का व्याकुल होना। मन का व्याकुल होना कैसे रूके? उसके लिये जंगली मन को पालतू बनाना होगा। जंगली मन पालतू हो जाता है, पालतू अभी हुआ नहीं है। ये रामायण पालतू बना देगी। ये रामचरितमानस की कथा, महाभारत की कथा। ये कृष्ण भगवान के दुपट्टे की कथा। रात को पाण्डवों को जिस तरह राक्षस ने घायल कर दिया था। उसको वरदान था,

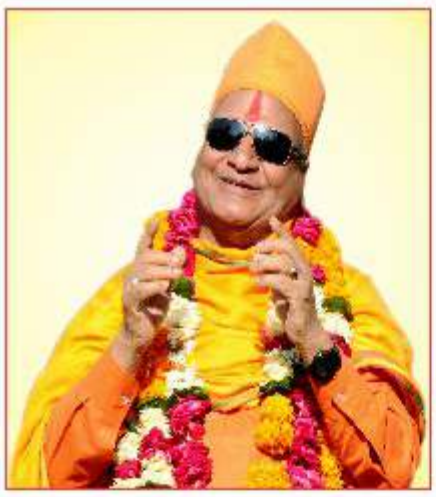

तुम क्रोध करते गये, वो बड़ा होता गया। मेरे को मालूम था, मैं हंसता गया वो छोटा होता गया। मैंने मच्छर जैसा होने पर उसे बांध दिया। ये कृष्ण कथा, राम कथा, ये नरसी मेहता की कथा आपके– हमारे लिये ऋषियों ने महर्षियों ने रिसर्च करने वाले ऋषियों ने इसीलिये लिखी। आपका– हमारा मन पालतू हो जावे। आपका– हमारा मन दिव्यांगों की सेवा में लगने लग जावे। आपका मन और हमारे को जब भी नरसी मेहता की हुण्डी स्वीकारो म्हारा सावरियां सेठ। बार–बार आवे, हमारे सांसों की हुण्डी भगवान सावरियां सेठ रोज स्वीकार कर रहे है।

गीत–

म्हारी हुण्डी स्वीकारो.....।
..... सावरा गिरधारी।

ये आम का फल इसलिये लगा, एक बीज बोया था। आज बगीचे में एक महानुभाव बोल रहे थे कि– हमारे यहाँ ऐसा आम था हमारे पिताजी के पास। पाँच– पाँच हजार आम के फल एक वृक्ष पर आते थे।

मतलब आम का ऐसा वृक्ष और केरियाँ ऐसी लूमलूमा कर डालियाँ ऐसी झुक जाती थी कि हम हाथ से तोड़ लेवें। दो–दो हजार, किसी ने कहा– पाँच हजार फल भी आते थे एक वृक्ष पे। एक बीज बोया। आज आप और हम धन्य–धन्य हो जायेंगे। रामकथा, कृष्ण कथा में। धन्य–धन्य हो जायेंगे भगवान के इस कार्य में, कथा में। जब हमारे मन को पालतू बना लेंगे। पालतू मन, बड़ा शक्तिशाली मन होता है। पालतू मन रिसर्च करता है, पालतू मन उपयोगी होता है। पालतू मन, मन के जीते जीत सदा वाला होता है। पालतू मन परिवर्तन से क्या घबराने वाला होता है? पालतू मन अन्तर्मन में सद्भावों की पावन गंगा बहाने वाला होता है। पालतू मन कहता है–

यह भी अच्छा वह भी अच्छा,
अच्छा–अच्छा सब मिल जावे।
जो जैसा है उसको वैसा,
मिल जाता है मंत्र मान लें।।

–कैलाश 'मानव'

स्वकल्याण नहीं परकल्याण के लिए जीयें

आत्मसंयमी और संघर्षशील व्यक्ति वह होता है, जो हर कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह जीवन में आने वाले खतरों से कभी नहीं डरता है। अवसर कितने भी प्रतिकूल क्यों न हों, परिस्थितियाँ कितनी भी खतरनाक क्यों न हों, वह आत्म–संयम से मुसीबतों का सामना करते हुए विजयश्री प्राप्त कर ही लेता है।

नेपोलियन बोनापार्ट, जिन्होंने अनेक लड़ाईयाँ लड़ी और जीतीं। अत्यंत निर्भीक, साहसी और संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। एक बार वे अपनी विशाल सेना लेकर निकल पड़े एल्पस पर्वत श्रृँखला को पार करने। वे जब अपनी सेना को आगे बढ़ने का आदेश देते हुए उसका

नेतृत्व कर रहे थे तो राह में उन्हें एक बूढ़ी औरत मिली उस बूढ़ी औरत ने नेपोलियन से पूछा –कहाँ जा रहे हो बेटा?

इस प्रश्न पर नेपोलियन ने बहादुरी से सीना चौड़ा करते हुए उत्तर दिया – इस एल्पस पर्वत को पार करने।

नेपोलियन का उत्तर सुनकर बूढ़ी औरत मन ही मन हँसने लगी और बोली –इस विशाल एल्पस पर्वत को पार करने जा रहे हो, जिसे आज तक कोई पार नहीं कर पाया और जिस–जिस ने इसे पार करने की कोशिश की वे मारे गए।

कोई भी नहीं बच पाया। इस पर्वत को पार कर पाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। अपने इरादे को त्याग दो और अगर अपनी और अपने सैनिकों की जान की सलामती चाहते हो तो यहीं से लौट जाओ।

नेपोलियन ने उस बूढ़ी औरत की बात को सुनकर उहाके लगाते हुए अपने गले से एक माला निकाली और बूढ़ी औरत को वह माला देते हुए कहा–हे माँ! तुम्हारा धन्यवाद, तुमने मुझे निराश नहीं किया है, अपितु तुमने तो मुझे और अधिक प्रेरित कर दिया है एवं मेरे मन में एक नई ऊर्जा का संचार कर दिया है।

मैं अवश्य ही इस पर्वत को पार करके तुम्हारे पास वापस आऊँगा और उस समय तुम भी अन्य लोगों के साथ मेरी जय–जयकार कर रही होगी। नेपोलियन की विशाल पर्वत पार कर लेने की बात पर बूढ़ी औरत ने प्रत्युत्तर में कहा –मैंने जिसे भी इस पर्वत के बारे में बताते हुए उसे लौट जाने को कहा, वे सभी मेरी बात सुनकर वापस लौट गए।

किसी ने भी पर्वत पर चढ़ाई करने की कोशिश नहीं की। तुम अकेले ऐसे व्यक्ति हो, जिसने इतने अदम्य साहस का परिचय दिया है। तुम्हें यह पर्वत तो क्या, दुनिया का कोई भी पर्वत नहीं रोक पाएगा। तुम अवश्य ही जीतोगे, क्योंकि तुम्हारे इरादे चट्टान की तरह मजबूत हैं।

जो जीवन में करो या मरो का सिद्धान्त अपनाते हैं और खतरों से खेलने की इच्छा रखते हैं, वे कभी असफल नहीं होते।

जो अपने जीवन में विकल्पों का त्याग कर देते हैं और एकमात्र लक्ष्य की तरफ ही ध्यान लगाते हैं, जीत उनकी मुट्ठी में होती है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झिनी–झिनी रोशनी से)

नेपाल में राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बना हुआ था। वहां कई भारतीय थे मगर सभी अपने भविष्य के प्रति अनिश्चित थे। इसी कारण प्रत्येक ने अपना एक न एक ठिकाना भारत में कलकत्ता, गोरखपुर या अन्यत्र कहीं बना रखा था। जिससे कभी आपात स्थिति में बेघर ने हो पायें। नेपाल के भारतीयों का स्नेह और समर्पण अनुकरणीय था। देश में अशांति होते हुए भी शिविर में जिस तरह सभी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया वह प्रशंसनीय था।

भारतीयों के पशुपतिनाथ मंदिर के चारों तरफ रुद्राक्ष की कई दुकाने हैं। इन दुकानों में पूजा सामग्री भी रखी जाती है। सबका व्यापार बहुत अच्छा चलता है। शिविर में 800 लोग आए, इनमें 40 प्रतिशत लोग ऑपरेशन योग्य थे, शल्य क्रिया से ये ठीक हो सकते थे। शिविर में घोषणा की गई कि इन रोगियों को उदयपुर भेजने का खर्चा कोई वहन कर सके तो इनका कल्याण हो सकता है। एक व्यक्ति ने अपना हाथ उठाया और एक रोगी का खर्चा वहन करने की घोषणा की। इसके बाद तो एक के बाद एक, लोगों में घोषणा करने की मानो होड़ मच गई। कैलाश महसूस कर रहा था कि दूरदराज रहने वाले भारतवासी, यदि सेवा करने का अवसर मिले तो खुशी खुशी उसमें सहभागिता करते हैं।

शिविर समाप्त कर कैलाश व अन्य मानसरोवर यात्रा हेतु निकल गये। काठमांडु से नेपालगंज एक छोटे से वायुयान में गये मगर वहां से टालम कटोरा और भी छोटे छोटे विमानों में जाना पड़ा। वहां से नेपाल–चीन सीमा क्षेत्र तक हेलीकॉप्टरों से गए। यह क्षेत्र उन दिनों काफी अशांत था। गुण्डागिर्दी चरम पर थी। गुण्डे यात्रियों से चौथ वसूली करते थे, उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था। यात्रियों को मन मारकर इन्हें चौथ देनी ही पड़ती थी।

सीमा पार कर चीन में प्रवेश किया। बीच में एक बड़ा सा पुल पार करना पड़ा इसके बाद ज्यूं ही एक पहाड़ी पर चढ़े एक साथ सैकड़ो याक नजर आये। याक पशु के बारे में अब तक तो सुना ही था, अपनी आंखों से उसे देखने का यह प्रत्यक्ष अवसर था। याक सामान तथा लोगों को ढोने का काम में लिये जाते थे। कैलाश के दल के लोगो का सामान भी इन्हीं याकों पर लाद दिया गया। कई लोग इन पर बैठ भी गये।

अंग - 205